

पद चालीस — संख्या उनतीस का गुप्त इतिहास

यहेजकेल संख्या दस

Jeff Pippenger

2026-08-31

यहेजकेल की पुस्तक में अनेक अद्भुत और महत्वपूर्ण भविष्यवाणी-संबंधी रेखाएँ और सत्य पाए जाते हैं। मन्दिर के भीतर नबियों के बाइबिलीय चित्रणों में, सब से बढ़कर यही यहेजकेल है जो पहियों के भीतर पहियों की पहचान कराता है। वे पहिए, सिस्टर व्हाइट के अनुसार, मानवीय गतिविधि की उस जटिल पारस्परिक क्रिया का प्रतिनिधित्व करते हैं जो पिछली वर्षा के समय की घटनाओं के क्रम को चित्रित करती है। उन घटनाओं का प्रतिनिधित्व नबी द्वारा तब किया गया जब वह एक अभिव्यक्त दृष्टान्त में स्वयं भविष्यवाणी का भाग बन गया; जैसे कि जब यहेजकेल यरूशलेम की घेराबन्दी के चौथे अध्याय के चित्रण में अपनी बाईं और फिर दाईं करवट लेटता है। तेरह विशिष्ट तिथियाँ भी हैं जो यहेजकेल के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत करती हैं, और ऐसा करते हुए वे पिछली वर्षा की अवधि के मार्गचिह्न प्रदान करती हैं, जब एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर लगाई जाती है। सत्य केवल तिथियों के माध्यम से ही नहीं, वरन् सत्रह, उन्तीस, पच्चीस, सत्तर, चालीस, तीन सौ नब्बे और निस्सन्देह, तीस जैसी संख्याओं के माध्यम से भी संप्रेषित किए गए हैं। एक और संख्या, जो सम्भवतः यहेजकेल की पुस्तक में सबसे महत्वपूर्ण संख्या है, वह एक सौ पचास है। तौभी एक सौ पचास की संख्या यहेजकेल की पुस्तक में पाई नहीं जाती। फिर भी, पंक्ति पर पंक्ति—वह वहाँ है।

एक सौ पचास संख्या भविष्यवाणी की दृष्टि से घेराबन्दी की रेखा के भीतर निहित है, और घेराबन्दी एक विशिष्ट भविष्यदर्शी रेखा है; अथवा यदि आप चाहें, तो घेराबन्दी एक पहिया है। इतिहास की एक भविष्यदर्शी रेखा में सदैव एक अल्फा और एक ओमेगा होता है, और ऐसा होने पर अल्फा और ओमेगा की विशेषताएँ उस रेखा के आरम्भ और अन्त में अवश्य प्रकट होनी चाहिए, अन्यथा वह रेखा नहीं है। घेराबन्दी की अल्फा घटना यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु थी, और घेराबन्दी का अन्त मसीह की दुल्हन की मृत्यु था, जैसा कि यरूशलेम के विनाश द्वारा निरूपित किया गया है।

और मैं यूहन्ना ने पवित्र नगर, नये यरूशलेम को, स्वर्ग में से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, जो अपने पति के लिए सजी हुई दुल्हन के समान तैयार किया गया था। और मैंने स्वर्ग में से एक बड़ा शब्द यह कहते सुना, देखो, परमेश्वर का तम्बू मनुष्यों के साथ है, और वह उनके साथ वास करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा, और उनका परमेश्वर होगा। और परमेश्वर उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और फिर मृत्यु न रहेगी, न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; क्योंकि पहली बातें जाती रहीं। और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ। और उसने मुझ से कहा, लिख; क्योंकि ये बातें सत्य और विश्वासयोग्य हैं। और उसने मुझ से कहा, हो चुका। मैं अल्फा और ओमेगा, आदि और अन्त हूँ। जो प्यासा है, उसे मैं जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत दूँगा। जो जय पाए, वही इन बातों का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा। पर जो डरपोक, और अविश्वासी, और घिनौने, और हत्यारे, और व्यभिचारी, और टोन्हे, और मूर्तिपूजक, और सब झूठे हैं, उनका भाग उस झील में होगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है; यही दूसरी मृत्यु है। फिर उन सात स्वर्गदूतों में से एक, जिसके पास सात कटोरे थे जो सात अन्तिम विपत्तियों से भरे हुए थे, मेरे पास आया, और मुझ से बातें करके कहने लगा, इधर आ, मैं तुझे दुल्हन, अर्थात् मेम्ने की पत्नी दिखाऊँगा। प्रकाशितवाक्य 21:2-9।

घेराबन्दी के आरम्भ में यहेजकेल की पत्नी मर जाती है, और वहाँ उसकी पहचान यहेजकेल की “आँखों की अभिलाषा” के रूप में की गई है; और उसी अध्याय में वर्णित यरूशलेम के विनाश में, यरूशलेम की पहचान इस्राएल की “आँखों की अभिलाषा” के रूप में की गई है।

फिर नौवें वर्ष में, दसवें महीने के दसवें दिन, यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, और उसने कहा, ... फिर यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, कि हे मनुष्य के सन्तान, देख, मैं एक ही आघात से तेरी आँखों की अभिलाषा को तुझ से दूर कर लेता हूँ; तौभी तू न विलाप करना और न रोना, और न तेरे आँसू बहने पाएँ। चुपचाप कराहना; मरे हुआँ के लिये शोक न करना; अपनी पगड़ी अपने सिर पर बाँधे रखना, और अपने पाँवों में जूते पहिने रखना, और अपने होंठ न ढाँपना, और मनुष्यों की दी हुई रोटी न खाना। तब मैं ने बिहान को लोगों से बातें कीं; और सन्ध्या को मेरी पत्नी मर गई; और मैं ने भोर को वैसा ही किया जैसा मुझे आज्ञा दी गई थी। तब लोगों ने मुझ से कहा, क्या तू हमें न बताएगा कि ये बातें हमारे लिये क्या अर्थ रखती हैं, कि तू ऐसा करता है?

तब मैंने उन्हें उत्तर दिया, “यहोवा का वचन मेरे पास आया, यह कहता हुआ, ‘इसाएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है: देखो, मैं अपने पवित्रस्थान को अशुद्ध करूँगा, जो तुम्हारी शक्ति की महिमा है, तुम्हारी आँखों की अभिलाषा है, और जिस पर तुम्हारा प्राण तरस खाता है; और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ, जिन्हें तुम पीछे छोड़ आए हो, तलवार से गिरेंगे। और तुम वही करोगे जो मैंने किया है: न तुम अपने होंठ ढाँकोगे, और न मनुष्यों की रोटी खाओगे। और तुम्हारी पगड़ियाँ तुम्हारे सिरों पर होंगी, और तुम्हारे जूते तुम्हारे पैरों में; तुम न विलाप करोगे और न रोओगे; परन्तु तुम अपने अधर्मों के कारण क्षीण होते जाओगे, और एक दूसरे की ओर देखकर कराहोगे।”

इस प्रकार यहजेकेल तुम्हारे लिए एक चिन्ह ठहरेगा; जो कुछ उसने किया है, उसके अनुसार तुम भी करोगे; और जब यह घटित होगा, तब तुम जान लोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूँ। और हे मनुष्य के सन्तान, क्या ऐसा उस दिन न होगा, जब मैं उनसे उनका बल, उनके वैभव का आनन्द, उनकी आँखों की अभिलाषा, और वह जिस पर उनका मन लगा रहता है, अर्थात् उनके पुत्रों और उनकी पुत्रियों को, छीन लूँ? और क्या उस दिन जो बच निकलेगा वह तेरे पास आकर तुझे यह तेरे ही कानों से सुनाने न पाएगा? उस दिन जो बच निकला होगा, उसके लिए तेरा मुँह खुल जाएगा, और तू बोलेगा, और फिर गूँगा न रहेगा; इस प्रकार तू उनके लिए एक चिन्ह ठहरेगा; और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। यहजेकेल 24:1, 15-27।

घेराबंदी का अल्फा यहजेकेल की अभिलाषा की मृत्यु है, और ओमेगा इस्राएल की अभिलाषा की मृत्यु है।

सुनते हुए भी न सुनना

पाँच अवसर ऐसे हैं जब प्राचीनों या लोगों को किसी न किसी प्रकार से यहजेकेल की सुनते हुए दर्शाया गया है। यहजेकेल 8:1 में, यहूदा के प्राचीन उसके सामने बैठे हैं। यहजेकेल 14:1 में, प्राचीन आकर उसके सामने बैठते हैं। यहजेकेल 20:1 में, इस्राएल के प्राचीन यहोवा से पूछने के लिए आते हैं। यहजेकेल 37:18 में, परमेश्वर यहजेकेल से कहता है: “जब तेरी प्रजा के सन्तान तुझ से यह कहकर बोलें, क्या तू हम को यह न बताएगा कि इन बातों से तेरा क्या अभिप्राय है?” चौबीसवें अध्याय में लोग सीधे पूछते हैं: “क्या तू हम को न बताएगा कि ये बातें हमारे लिये क्या हैं, जो तू ऐसा करता है?” इन पाँचों उदाहरणों में प्राचीन या लोग लौदीकिया की दशा में हैं।

और उसने कहा, जा, और इस प्रजा से कह, तुम सुनते तो रहो, परन्तु समझो नहीं; और देखते तो रहो, परन्तु बूझो नहीं। इस प्रजा के हृदय को मोटा कर दे, और उनके कानों को भारी कर दे, और उनकी आँखें बन्द कर दे; ऐसा न हो कि वे अपनी आँखों से देखें, और अपने कानों से सुनें, और अपने हृदय से समझें, और फिर जाएँ, और चंगे हो जाएँ। यशायाह 6:9, 10.

लोगों के सुनते हुए भी न सुनने के पाँच निरूपण, और लोगों के देखते हुए भी न देखने के पाँच निरूपण, यशायाह की साक्षी में उन लोगों के पाँच चरणों के अनुरूप हैं जो देखने और सुनने से इन्कार करते हैं।

परन्तु यहोवा का वचन उनके लिये आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा; पंक्ति पर पंक्ति, पंक्ति पर पंक्ति; यहाँ थोड़ा, और वहाँ थोड़ा ठहरेगा; ताकि वे जाकर पीछे की ओर गिरें, और टूट जाएँ, और फँसें, और पकड़ लिए जाएँ। यशायाह 28:13।

और उनमें से बहुत-से ठोकर खाएँगे, और गिर पड़ेंगे, और टूट जाएँगे, और फंदे में फँस जाएँगे, और पकड़ लिए जाएँगे। यशायाह 8:15।

चिन्ह

यहेजकेल के चौबीसवें अध्याय में, घेराबन्दी के आरम्भ और यहेजकेल की पत्नी—जो उसकी आँखों की अभिलाषा थी—की मृत्यु से प्रारम्भ होने वाला काल, यरूशलेम—जो इस्राएल की आँखों की अभिलाषा था—की मृत्यु पर समाप्त होता है। डेढ़ वर्ष की यह घेराबन्दी अल्फा और ओमेगा की मुहर को समाहित किए हुए है, और यह काल एक चिन्ह से आरम्भ होता है और एक चिन्ह पर समाप्त होता है। जैसे यहेजकेल चौबीस में है, वैसे ही यीशु मत्ती चौबीस में घेराबन्दी के चिन्ह की पहचान कराते हैं।

“मसीह के वचन बहुत बड़ी संख्या में लोगों के सुनते-सुनते कहे गए थे; परन्तु जब वह अकेले थे, तब पतरस, यूहन्ना, याकूब और अन्द्रियास उनके पास आए, जब वह जैतून के पर्वत पर बैठे थे। उन्होंने कहा, ‘हमें बताइए, ये बातें कब होंगी? और तेरे आगमन तथा जगत के अंत का क्या चिन्ह होगा?’ यीशु ने अपने चेलों को यरूशलेम के विनाश और अपने आगमन के महान दिन के विषय में अलग-अलग करके उत्तर नहीं दिया। उसने इन दोनों घटनाओं के वर्णन को परस्पर मिला दिया। यदि वह अपने चेलों के सामने भावी घटनाओं को वैसे ही खोल देता, जैसे वह उन्हें स्वयं देख रहा था, तो वे उस दृश्य को सहन करने में असमर्थ होते। उन पर दया करते हुए उसने इन दो महान संकटों के वर्णन को एक साथ मिला दिया, और चेलों के लिए यह छोड़ दिया कि वे उसका अर्थ स्वयं समझें। जब उसने यरूशलेम के विनाश का उल्लेख किया, तब उसके भविष्यसूचक वचन उस घटना से आगे बढ़कर उस अंतिम महादाह तक पहुँच गए, उस दिन तक जब प्रभु अपने स्थान से निकलकर पृथ्वी के निवासियों को उनके अधर्म के कारण दण्ड देने के लिए उठ खड़ा होगा, जब पृथ्वी अपना लोहू प्रकट करेगी और अपने घात किए हुआँ को फिर कभी न ढाँपेगी। यह समस्त उपदेश केवल चेलों के लिए ही नहीं, वरन् उनके लिए भी दिया गया था जो पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दृश्यों में जीवित होंगे।”

शिष्यों की ओर मुड़कर मसीह ने कहा, “सावधान रहो कि कोई तुम्हें भरमा न दे। क्योंकि बहुत से मेरे नाम से आकर कहेंगे, मैं मसीह हूँ; और बहुतों को भरमाएँगे।” बहुत से झूठे मसीहा प्रकट होंगे, जो यह दावा करेंगे कि वे चमत्कार करते हैं, और यह घोषणा करेंगे कि यहूदी जाति के उद्धार का समय आ पहुँचा है। वे बहुतों को भ्रमित करेंगे। मसीह के वचन पूरे हुए। उनकी मृत्यु और यरूशलेम की घेराबन्दी के बीच बहुत से झूठे मसीहा प्रकट हुए। परन्तु यह चेतावनी उन लोगों को भी दी गई थी जो संसार के इस युग में रहते हैं। यरूशलेम के विनाश से पहले जो वही छल किए गए थे, वे युगों-युगों तक किए जाते रहे हैं, और फिर किए जाएँगे।

“‘और तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की अफ़वाहें सुनोगे; सावधान रहो, घबराना मत; क्योंकि इन सब बातों का होना अवश्य है, परन्तु अंत अभी नहीं है।’ यरूशलेम के विनाश से पूर्व, मनुष्य प्रभुत्व के लिए संघर्ष कर रहे थे। सम्राटों की हत्या की गई। जो सिंहासन के ठीक निकट खड़े समझे जाते थे, वे मार डाले गए। लड़ाइयाँ और लड़ाइयों की अफ़वाहें थीं। मसीह ने कहा, ‘इन सब बातों का होना अवश्य है, परन्तु अंत [एक राष्ट्र के रूप में यहूदी जाति का अंत] अभी नहीं है। क्योंकि जाति जाति के विरुद्ध, और राज्य राज्य के विरुद्ध उठ खड़ा होगा; और भिन्न-भिन्न स्थानों में अकाल, और महामारियाँ, और भूकंप होंगे। ये सब पीड़ाओं का आरम्भ हैं।’ मसीह ने कहा, जैसे ही रब्बी इन चिन्हों को देखेंगे, वे उन्हें उन राष्ट्रों पर परमेश्वर के न्याय ठहराएँगे, क्योंकि वे उसकी चुनी हुई प्रजा को बंधुआई में रखे हुए हैं। वे घोषणा करेंगे कि ये चिन्ह मसीहा के आगमन के संकेत हैं। धोखा न खाना; ये उसके न्यायों का आरम्भ हैं। लोगों ने अपनी ही ओर दृष्टि की है। उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया और न परिवर्तित हुए, कि मैं उन्हें चंगा करूँ। जिन चिन्हों को वे अपनी बंधुआई से मुक्ति के संकेत के रूप में प्रस्तुत करते हैं, वे उनके विनाश के चिन्ह हैं।” The Desire of Ages, 628.

66 ईस्वी में यरूशलेम की घेराबन्दी में यह चिन्ह सम्मिलित था कि रोम ने पवित्रस्थान के प्रांगण में अपने ध्वज स्थापित किए। 66 से 70 की अवधि की घटनाओं पर यीशु की व्याख्या ने 70 ईस्वी के विनाश को उनके द्वितीय आगमन के साथ संरेखित किया; और उनके द्वितीय आगमन के साथ एक चिन्ह संबद्ध है।

“शीघ्र ही हमारी दृष्टि पूर्व की ओर आकर्षित हुई, क्योंकि वहाँ एक छोटा काला बादल दिखाई दिया था, जो मनुष्य के हाथ के लगभग आधे के बराबर बड़ा था, और जिसे हम सब जानते थे कि वह मनुष्य के पुत्र का चिन्ह था।” The Day Star, 1846.

66 से 70 ईस्वी की अवधि के इतिहास के आरम्भ और अंत में एक ऐसा चिन्ह निहित है, जो घेरेबन्दी के आरम्भ और नगर के विनाश से संबद्ध है, और जो 587 ईसा पूर्व तथा 586 ईसा पूर्व में नेत्रों की अभिलाषा की मृत्यु के अल्फा और ओमेगा चिन्ह के साथ मेल खाता है।

डेढ़ वर्ष की घेराबन्दी का इतिहास अंतिम दिनों के लिए एक “चिह्न” है। यह जेकेल के इतिहास में दर्शाई गई मूर्ख कुँवारियों का समकक्ष बुद्धिमान कुँवारियों के इतिहास में मिलता है, जिन्होंने 66 ईस्वी में घेराबन्दी के चिह्न को देखा और सुरक्षित स्थान की ओर भाग गई। डेढ़ वर्ष की घेराबन्दी वह चिह्न है जो उपासकों के दो वर्गों को प्रकट करती है। एक वर्ग उस चिह्न को समझेगा, दूसरा वर्ग, जिसे यशायाह द्वारा “बहुतों” के रूप में दर्शाया गया है—न देखेगा, न सुनेगा।

बहुत और थोड़े

तब राजा ने सेवकों से कहा, इसे हाथ-पाँव बाँधकर ले जाओ, और बाहरी अन्धकार में डाल दो; वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं। मत्ती 22:13, 14.

इस प्रकार जो अन्तिम हैं वे पहले होंगे, और जो पहले हैं वे अन्तिम; क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं। मत्ती 20:16.

देखना और सुनना

यह जेकेल की पुस्तक में पाँच अभिनय-रूपक दृष्टांत हैं, और पाँच अवसर ऐसे भी हैं जब यह जेकेल ने प्रधानों और लोगों से बातें कीं। ये दो साक्षी उन पाँच मूर्ख कुँवारियों की पहचान कराते हैं जो ‘देखने’ से इनकार करती हैं और ‘सुनने’ से भी इनकार करती हैं। वे उस बड़े हुए ज्ञान को देखने या सुनने से इनकार करती हैं, जो तब प्रकट होता है जब यीशु, जो यहूदा के गोत्र का सिंह है, अपने भविष्यवाणीमय वचन की मुहरें खोलता है।

संसार देखेगा और सुनेगा

हे समस्त जगत के निवासियों, और पृथ्वी के रहनेवालों, जब वह पर्वतों पर ध्वज उठाए, तब तुम देखो; और जब वह तुरही फूँके, तब तुम सुनो। यशायाह 18:3॥

और उस दिन बहरे पुस्तक के वचन सुनेंगे, और अन्धों की आँखें धुँधलेपन और अन्धकार में से देखेंगी। यशायाह 29:18।

मेरी मूर्ख और जड़बुद्धि प्रजा को कोई ज्ञान नहीं है

मैं कब तक ध्वज को देखता रहूँ, और नरसिंगे का शब्द सुनता रहूँ? क्योंकि मेरी प्रजा मूर्ख है; उन्होंने मुझे नहीं जाना; वे अविवेकी पुत्र हैं, और उनमें कुछ भी समझ नहीं है; वे बुराई करने में चतुर हैं, परन्तु भलाई करना वे नहीं जानते। यिर्मयाह 4:21, 22.

यह याकूब के घराने में घोषित करो, और यहूदा में इसका प्रचार करो, यह कहकर: अब यह सुनो, हे मूर्ख और निर्बुद्धि लोगों; जिनकी आँखें तो हैं, पर वे देखते नहीं; जिनके कान तो हैं, पर वे सुनते नहीं। यिर्मयाह 5:20, 21.

एक बलवाग्रही घराना

और यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, यह कहता हुआ, हे मनुष्य के सन्तान, तू एक विद्रोही घराने के बीच में रहता है, जिनके देखने के लिए आँखें तो हैं, पर वे देखते नहीं; सुनने के लिए कान तो हैं, पर वे सुनते नहीं; क्योंकि वे एक विद्रोही घराना हैं। यहजकेल 12:1, 2.

इस कारण मैं उनसे दृष्टान्तों में बात करता हूँ, क्योंकि वे देखते हुए भी नहीं देखते; और सुनते हुए भी नहीं सुनते, और न ही समझते हैं। और उन में यशायाह की वह भविष्यद्वाणी पूरी होती है, जो कहती है, सुनते हुए तुम सुनोगे, परन्तु न समझोगे; और देखते हुए तुम देखोगे, परन्तु न जानोगे। क्योंकि इस प्रजा का हृदय मोटा हो गया है, और उनके कान सुनने में भारी हो गए हैं, और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं; ऐसा न हो कि वे कभी अपनी आँखों से देखें, और अपने कानों से सुनें, और अपने हृदय से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ।

परन्तु धन्य हैं तुम्हारी आँखें, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि बहुत से भविष्यद्वाक्ताओं और धर्मी जनों ने उन बातों को देखने की अभिलाषा की जिन्हें तुम देखते हो, परन्तु उन्हें नहीं देखा; और उन बातों को सुनने की जिन्हें तुम सुनते हो, परन्तु उन्हें नहीं सुना। मत्ती 13:13-17।

प्राचीन मार्ग

यहोवा यों कहता है, मार्गों पर खड़े होकर देखो, और प्राचीन मार्गों के विषय में पूछो, कि भला मार्ग कहाँ है; और उसी में चलो, तब तुम अपने प्राणों के लिये विश्राम पाओगे। परन्तु उन्होंने कहा, हम उस में न चलेंगे। फिर मैंने तुम्हारे ऊपर पहरेवाले ठहराए, यह कहते हुए, नरसिंगे की ध्वनि पर ध्यान दो। परन्तु उन्होंने कहा, हम ध्यान न देंगे। यिर्मयाह 6:16, 17.

1840-1844 का संदेश

“1840-1844 के बीच दिए गए सभी संदेशों को अब प्रभावशाली बनाया जाना है, क्योंकि बहुत से लोग अपनी दिशा खो चुके हैं। ये संदेश सब कलीसियाओं तक पहुँचने हैं।”

“मसीह ने कहा, ‘धन्य हैं तुम्हारी आँखें, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि बहुत से भविष्यद्वाक्ताओं और धर्मी जनों ने उन बातों को देखने की अभिलाषा की जिन्हें तुम देखते हो, परन्तु उन्हें न देखा; और उन बातों को सुनने की जिन्हें तुम सुनते हो, परन्तु उन्हें न सुना’ [मत्ती 13:16, 17]। धन्य हैं वे आँखें जिन्होंने 1843 और 1844 में दिखाई गई बातों को देखा।”

“संदेश दे दिया गया था। और इस संदेश को दोहराने में कोई विलंब नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय की निशानियाँ पूरी होती जा रही हैं; समापन का कार्य अवश्य किया जाना चाहिए। थोड़े समय में एक महान कार्य संपन्न किया जाएगा। परमेश्वर की नियुक्ति के अनुसार शीघ्र ही एक संदेश दिया जाएगा, जो बढ़कर एक ऊँचे शब्दघोष में परिवर्तित हो जाएगा। तब दानियेल अपने भाग में खड़ा होगा, अपनी गवाही देने के लिए।”

Manuscript Releases, volume 21, 437.

घेरेबंदी का चिन्ह

यहजकेल की पुस्तक में पाँच बार ऐसे प्रसंग आते हैं जहाँ उसने एक दृष्टान्त को ‘अभिनय द्वारा’ प्रस्तुत किया, जिसे लोगों ने देखने से इन्कार किया; और पाँच बार उसने उन्हीं लोगों से ‘बोलकर’ कहा, जिन्होंने सुनने से इन्कार किया। अभिनय द्वारा प्रस्तुत दृष्टान्त और वाणी—इन दो साक्षियों को पाँच मूर्ख कुँवारियों के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। अभिनय द्वारा प्रस्तुत दृष्टान्तों में से एक, जो अध्याय चार में स्थित है, घेराबंदी के “चिन्ह” का प्रतिनिधित्व करता है, जो आनेवाले विनाश की चेतावनी देता है। यहजकेल का संदेश लौदीकिया के लिए संदेश है।

लाओदीकिया के लिए दिया गया “चिह्न” ‘घेराबंदी का चिह्न’ है, और अन्तिम दिनों की घेराबंदी का प्रतिनिधित्व कई साक्षियों द्वारा किया गया है। मसीह के दिनों के यहूदियों को दिया गया एकमात्र चिह्न योना का चिह्न था, जो व्हेल के

पेट में तीन दिनों की एक अभिव्यक्त दृष्टान्तात्मक क्रिया का प्रतिनिधित्व करता है।

तब शास्त्रियों और फरीसियों में से कितनों ने उत्तर देकर कहा, हे गुरुवर, हम तुझ से कोई चिन्ह देखना चाहते हैं। परन्तु उसने उत्तर देकर उनसे कहा, यह दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी चिन्ह ढूँढ़ती है; और इसे योना भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ और कोई चिन्ह न दिया जाएगा। क्योंकि जैसे योना तीन दिन और तीन रात बड़ी मछली के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के हृदय में रहेगा। मत्ती 12:38-40।

योना का चिन्ह

योना का चिन्ह मृत्यु से पुनरुत्थान का एक अभिनय-रूपक था। यूहन्ना उसी सत्य का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि उसे खौलते हुए तेल के कड़ाहे में डाला गया, और वह जीवित बाहर निकल आया। सिंहीं की मांद में दानिय्येल और नबूकदनेस्सर की भट्टी में वे तीन वीर मृत्यु से पुनरुत्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये सब प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह में पुनर्जीवित किए गए एक लाख चवालीस हजार का प्रतिनिधित्व करते हैं।

“उद्धारकर्ता के विचार अब अतीत और भविष्य पर मनन करने से लौट आए। जब लोग अपने मनों पर पड़े प्रभावों के अनुसार, और अपने पास उपलब्ध ज्योति के अनुसार, जो उन्होंने देखा और सुना था उसका अर्थ स्पष्ट करने का प्रयत्न कर रहे थे, तब ‘यीशु ने उत्तर देकर कहा, यह शब्द मेरे कारण नहीं आया, परन्तु तुम्हारे लिये आया है।’ यह उसके मसीहतत्व का परम प्रमाण था, पिता की ओर से यह संकेत था कि यीशु ने सत्य कहा था, और वह परमेश्वर का पुत्र था। क्या यहूदी उच्च स्वर्ग की इस साक्षी से फिर भी मुड़ जाएंगे? उन्होंने एक बार उद्धारकर्ता से पूछा था, तू कौन-सा चिन्ह दिखाता है कि हम देखकर विश्वास करें? मसीह की सेवकाई के समस्त काल में असंख्य चिन्ह दिए गए थे; तौभी उन्होंने अपनी आंखें मूंद ली थीं और अपने हृदय कठोर कर लिए थे, ऐसा न हो कि वे आश्चस्त हो जाएं। लाज़र के पुनरुत्थान का परम चमत्कार भी उनके अविश्वास को दूर न कर सका, वरन् उसने उन्हें और भी अधिक द्वेष से भर दिया; और अब जबकि पिता बोल चुका था, और वे किसी और चिन्ह की मांग नहीं कर सकते थे, उनके हृदय नम्र न हुए और उन्होंने फिर भी विश्वास करने से इनकार कर दिया।” स्पिरिट ऑफ प्रॉफ़ेसी, खंड 3, 79.

लाज़रुस उस पुनरुत्थान का चिन्ह था, जिसका अभिनय योना ने मछली के पेट में किया था। पुनर्जीवित लाज़रुस के संबंध में पिता की वाणी दिव्यता और मानवता के संयोग का प्रतिनिधित्व करती है, जो निस्संदेह मसीह का स्वभाव है, जिसने अपने ऊपर मानवीय देह धारण की। दिव्यता का मानवता के साथ यह संयोग एक लाख चवालीस हजार का ध्वज-चिह्न है, और लाज़रुस पुनरुत्थान की उस सामर्थ्य का चिन्ह है, जो सृष्टिकर्ता और सृष्ट प्राणी के मिलन को सम्पन्न करती है।

“लाज़र को जिलाए जाने के द्वारा, बहुतों को यीशु पर विश्वास करने के लिए प्रेरित किया गया। यह परमेश्वर की योजना थी कि उद्धारकर्ता के आने से पहले लाज़र मर जाए और कब्र में रख दिया जाए। लाज़र को जिलाया जाना मसीह का सर्वोपरि चमत्कार था, और इसके कारण बहुतों ने परमेश्वर की महिमा की।” Manuscript Releases, volume 21, 111.

लाज़रुस ने यरूशलेम में विजयी प्रवेश का नेतृत्व किया, और वह पुनरुत्थान का जीवित “चिह्न” था, जिसका चित्रण योना द्वारा किया गया है।

“लाज़र, जिसकी देह कब्र में सड़न देख चुकी थी, परन्तु जो अब महिमामय पुरुषत्व के सामर्थ्य में आनन्दित था, उस पशु को आगे ले चला जिस पर उद्धारकर्ता सवार थे।” The Desire of Ages, 572.

विजयोत्सवपूर्ण प्रवेश एक्सेटर शिविर-सभा के साथ मेल खाता है, जो दस कुँवारियों के दृष्टान्त की अल्फा-पूर्ति थी, और इस प्रकार योना तथा लाज़र के “चिन्ह” को इस संदेश की उद्घोषणा—“देखो, दूल्हा आता है!”—की ओमेगा तथा परिपूर्ण पूर्ति के साथ संरेखित करता है।

“मेरा ध्यान प्रायः दस कुँवारियों के दृष्टान्त की ओर आकर्षित किया जाता है, जिनमें से पाँच बुद्धिमान थीं और पाँच मूर्ख। यह दृष्टान्त अक्षरशः पूरा हुआ है और होगा, क्योंकि इसका विशेष अनुप्रयोग इसी समय के लिए है, और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के समान यह पूरा हुआ है और समय के अन्त तक वर्तमान सत्य बना रहेगा।”

Review and Herald, August 19, 1890.

योना, लाज़रुस और शमूएल स्नो का एक्सेटर शिविर-सभा में देर से पहुँचना यहजेकेल के “घेराबंदी के चिन्ह” के अनुरूप है। लाज़रुस ने मसीह को गदहे पर सवार होकर यरूशलेम में प्रवेश कराया।

“अगस्त, 1844 में एक्सेटर (न्यू हैम्पशायर) के शिविर-सम्मेलन में बेट्स उन महत्वपूर्ण नेताओं में से एक था, जब ‘सच्ची आधी रात की पुकार’ पहली बार प्रस्तुत की गई थी। संयोगवश, उस दिन प्रातःकालीन सभा में शिविर में प्रचार करने के लिए बेट्स को चुना गया था। वह अपने श्रोताओं को विश्वासयोग्य बने रहने का आग्रह कर रहा था और शांत भाव से उन्हें यह आश्वासन दे रहा था कि परमेश्वर केवल उनकी परीक्षा ले रहा है, कि वे विलंब के समय में हैं, और इसी प्रकार की बातें कह रहा था, तभी सैमुअल एस. स्नो घोड़े पर सवार होकर शिविर में पहुँचा। अपनी बहन, श्रीमती जॉन काउच, के पास बैठते हुए, स्नो ने अपने इस विश्वास को फिर दोहराया कि मसीह नियत समय पर प्रकट होगा। अत्यन्त उद्वेलित होकर, श्रीमती काउच ने उठकर यह घोषणा करते हुए श्रोताओं को चकित कर दिया, ‘यहाँ एक व्यक्ति है जिसके पास परमेश्वर की ओर से एक सन्देश है!’” Leroy Froom, *The Prophetic Faith of our Fathers*, volume 4, 549.

अप्रैल 1521 में मार्टिन लूथर घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली एक गाड़ी में बैठकर डाइट ऑफ वर्म्स की यात्रा पर गए, जहाँ उन्होंने पोपीय परंपराओं और रीति-रिवाजों को अस्वीकार कर दिया और कहा, “जब तक मुझे पवित्रशास्त्रों की साक्षी या स्पष्ट तर्क द्वारा आश्वस्त न किया जाए... मैं किसी भी बात से पलट नहीं सकता और न पलटूँगा, क्योंकि विवेक के विरुद्ध जाना न तो सुरक्षित है और न उचित। मैं यहीं खड़ा हूँ। मैं और कुछ नहीं कर सकता। परमेश्वर मेरी सहायता करे। आमीन।”

जिस प्रकार फ़रीसियों ने मसीह के विजयोत्सवी प्रवेश का विरोध किया, उसी प्रकार पोपीय अधिकारियों ने लूथर के प्रवेश का विरोध किया। तब लूथर ने अपना नाम बदल लिया (जो मुहरबंदी का एक प्रतीक है) और वह उस समय तक छिपा रखा गया जब वह नए नियम का जर्मन भाषा में अनुवाद कर रहा था। डाइट ऑफ़ वर्म्स में उसकी प्रस्तुति उस मध्यरात्रि पुकार का प्रतिरूप थी, जिसने उस समय की कलीसिया-राज्य अधिकारियों की ओर से मृत्यु-फ़रमान को जन्म दिया, और इस प्रकार रविवार के विधान का भी प्रतिरूप ठहरी। ‘युंकर यॉर्ग’ के नाम से दस महीने तक छिपे रहने के बाद, अधिकारियों की ओर से आने वाला संकट बदल चुका था, और उसका मुख्य कारण भ्रष्ट चार्ल्स पंचम के सामने उपस्थित दो सैन्य समस्याएँ थीं। वे दो सैन्य संकट फ़्रांस और इस्लाम थे, जो समाजवाद और इस्लाम के उसी अशुद्ध गठबंधन का प्रतिनिधित्व करते हैं जो आज मानवजाति का सामना कर रहा है।

“पृथ्वी में परमेश्वर का कार्य, युग-युग में, प्रत्येक महान सुधार या धार्मिक आंदोलन में, एक उल्लेखनीय समानता प्रकट करता है। मनुष्यों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के सिद्धांत सदा एक ही रहते हैं। वर्तमान के महत्वपूर्ण आंदोलनों का अपना समांतर अतीत के आंदोलनों में पाया जाता है, और पूर्व युगों में कलीसिया का अनुभव हमारे अपने समय के लिए अत्यंत मूल्यवान शिक्षाएँ रखता है।” *The Great Controversy*, 343.

लाज़र द्वारा संचालित एक गधे ने मसीह को यरूशलेम में पहुँचाया, घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली एक बग़्घी लूथर को डाइट ऑफ वर्म्स तक ले गई, और एक घोड़ा स्नो को एक्सेटर शिविर-सभा तक लाया; इस प्रकार गधे और घोड़े—जो दोनों “Equidae” कुल के “Equus” वंश के सदस्य हैं—को मध्यरात्रि की पुकार के संदेश के चिन्ह के रूप में चिह्नित किया गया।

हे सिय्योन की पुत्री, अत्यन्त आनन्द कर; हे यरूशलेम की पुत्री, जयजयकार कर: देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; वह धर्मी है, और उद्धार लिये हुए है; दीन है, और गदहे पर, अर्थात् गदही के बच्चे, बछेड़े पर सवार है।
जकर्याह 9:9.

आधी रात के पुकार के संदेश का चिन्ह गदहे या घोड़े का आगमन है, जो दोनों इस्लाम के प्रतीक हैं। आधी रात के पुकार के सच्चे संदेश का चुना हुआ दूत घोड़े पर आया, जो मसीह के गदहे पर आगमन के अनुरूप था। अंतिम दिनों में “घेरा” एलेन व्हाइट की उस पहचान की पूर्ति द्वारा चिह्नित होता है कि नैशविल नगर को “अग्नि के गोले” द्वारा आघात किया जाना है।

घेराबंदी की शुरुआत नैशविल के अग्निगोलों से क्यों होती है? क्या इसका कारण यह है कि परमेश्वर के भविष्यवाणीमय वचन में गदहे और घोड़े के द्वारा इस्लाम का प्रतिनिधित्व किया गया है?

स्मुरना

सम्राट नीरो स्मुरना की कलीसिया की शुरुआत को चिह्नित करता है, जब सन् 64 में रोम नगर को जला दिया गया था। यह तिथि उस मसीही कलीसिया के उत्पीड़न की शुरुआत को चिह्नित करती है, जो दो सौ पचास वर्ष की अवधि में संपन्न हुआ और जिसका समापन सन् 313 में मिलान की आज्ञाप्ति पर हुआ। पशु की मूरत का गठन उस अल्फा वेमार्क का प्रतिनिधित्व करता है जो एक ऐसी अवधि का परिचय कराता है जिसका अंत उस ओमेगा वेमार्क के साथ होता है, जिसका प्रतिनिधित्व शीघ्र-आगामी रविवार-विधि पर पशु की छाप द्वारा किया गया है। इस अवधि की पहचान “आज्ञाप्तियों” से आरंभ होने वाली के रूप में की गई है।

“यदि पाठक उस शीघ्र आने वाले संघर्ष में प्रयुक्त की जाने वाली शक्तियों को समझना चाहता है, तो उसे केवल उन उपायों के अभिलेख का अनुसरण करना है जिन्हें रोम ने भूतकाल की सदियों में उसी उद्देश्य के लिए अपनाया था। यदि वह जानना चाहता है कि पोपवादी और प्रोटेस्टेंट, संयुक्त होकर, उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करेंगे जो उनके मत-सिद्धांतों को अस्वीकार करते हैं, तो वह उस आत्मा को देखे जिसे रोम ने सब्त और उसके रक्षकों के प्रति प्रकट किया था।

“राजकीय फ़रमान, महासभाएँ, और लौकिक सत्ता द्वारा समर्थित कलीसियाई अध्यादेश वे सोपान थे, जिनके द्वारा उस मूर्तिपूजक पर्व ने मसीही जगत में अपना आदरपूर्ण स्थान प्राप्त किया। रविवार-पालन को प्रवर्तित करने वाला पहला सार्वजनिक उपाय वह विधि थी जिसे कॉन्स्टैन्टाइन ने अधिनियमित किया। (ईस्वी सन् 321; पृष्ठ 53 के लिए परिशिष्ट टिप्पणी देखें।) इस फ़रमान के अनुसार नगरवासियों को ‘सूर्य के आदरणीय दिन’ विश्राम करना था, परन्तु देहात के लोगों को अपने कृषि-कार्य जारी रखने की अनुमति थी। यद्यपि यह वस्तुतः एक अन्यजातीय विधि थी, तथापि मसीहियत को नाममात्र स्वीकार कर लेने के बाद सम्राट ने इसे लागू किया।” —The Great Controversy, 574.

स्मिर्ना की कलीसिया से परगमुस की कलीसिया की ओर संक्रमण को चिह्नित करने वाला पहला राजकीय फ़रमान सन् 313 का मिलान का फ़रमान था। वह उस प्रथम चरण का प्रतिनिधित्व करता था, जिसने सन् 321 के प्रथम रविवार-व्यवस्था की ओर अग्रसर किया। यरूशलेम का विनाश रविवार-व्यवस्था का प्रतीक है, और दो भविष्यद्वाणी-संबंधी साक्षी उस घेराबंदी की पहचान कराते हैं जो उस विनाश से पहले हुई थी। वे दो घेराबंदियाँ—जिनका प्रतिनिधित्व क्रमशः ईसा पूर्व 587 में बाबुल की तीसरी घेराबंदी और सन् 70 में रोम की दूसरी घेराबंदी द्वारा होता है—इस बात की पहचान कराती हैं कि रविवार-व्यवस्था के मार्गचिह्न से पहले आने वाला मार्गचिह्न एक भविष्यद्वाणी-संबंधी घेराबंदी है।

नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीम के विरुद्ध घेरा डाला, फिर यहोयाकीम के विरुद्ध, और अंत में सिदकियाह के विरुद्ध। केस्तियुस ने सन् 66 में घेरा डाला, और उस चिन्ह को पूरा किया जो यीशु ने कलीसिया को दिया था, जैसे 587 ईसा पूर्व के तीसरे घेरे में यहजेकेल की पत्नी की मृत्यु का चिन्ह उपस्थित था। यरूशलेम के विनाश से पहले आने वाला मार्गचिह्न घेरा है, और वह एक “चिन्ह” भी है। सन् 321 के रविवार व्यवस्था से पहले आने वाला मार्गचिह्न मिलान का फ़रमान था, जहाँ एक ऐसी कलीसिया (स्मिर्ना) से, जिस पर कोई निंदा नहीं है, पेरगमुन में संक्रमण होता है, जो समझौता कर चुकी कलीसिया का प्रतीक है।

अतः मिलान का फरमान भविष्यवाणीपूर्ण घेरेबंदी की शुरुआत है, और वह एक चिन्ह भी है। यह उस बिंदु को भी चिह्नित करता है जहाँ एक लाख चवालीस हज़ारों का लौदीकिया आंदोलन एक लाख चवालीस हज़ारों के फिलाडेल्फिया आंदोलन में संक्रमण करता है।

फिलाडेल्फिया और स्मूर्ना, प्रकाशितवाक्य की सात कलीसियाओं में केवल वे दो कलीसियाएँ हैं जिनके विरुद्ध कोई दोषारोपण नहीं है। यह तथ्य, बदले में, उस संक्रमण की पहचान कलीसिया संघर्षरत से कलीसिया विजयी तक के संक्रमण के रूप में करता है। वह संक्रमण मिलान की आज्ञाप्ति के साथ मेल खाता है, जहाँ एक लाख चवालीस हज़ारों का उत्तरकालीन आंदोलन वह आठवीं कलीसिया बन जाता है, जो उन सात में से है। फिलाडेल्फिया और स्मूर्ना ही वे केवल दो कलीसियाएँ भी हैं जो उन लोगों के साथ संघर्ष करती हैं जो अपने को यहूदी कहते हैं, परन्तु वास्तव में शैतान के आराधनालय के हैं।

313 का वह मार्गचिह्न 1844 में 12 से 17 अगस्त तक आयोजित एक्सेटर शिविर-सभा के साथ भी मेल खाता है। जब वह शिविर-सभा समाप्त हुई, तब वह संदेश 22 अक्टूबर, 1844 को द्वार बंद होने तक संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी समुद्री तट पर ज्वारभाटे की लहर के समान फैल गया।

“ज्वार-भाटे की एक प्रचंड लहर के समान वह आंदोलन समस्त देश पर छा गया। नगर से नगर, गाँव से गाँव, और दूरस्थ ग्रामीण प्रदेशों तक वह फैल गया, यहाँ तक कि परमेश्वर की प्रतीक्षारत प्रजा पूर्णतः जागृत हो गई। इस उद्घोषणा के सामने उन्मादिता वैसे ही लुप्त हो गई जैसे उगते हुए सूर्य के सामने प्रातःकाल का पाला। विश्वासियों ने देखा कि उनका संदेह और उनकी उलझन दूर हो गई है, और आशा तथा साहस ने उनके हृदयों को प्रेरित किया। यह कार्य उन अतिरेकों से रहित था जो सदा प्रकट होते हैं जब परमेश्वर के वचन और आत्मा के नियंत्रक प्रभाव के बिना केवल मानवीय उत्तेजना होती है। अपने स्वरूप में यह उन आत्म-दैन्य और प्रभु की ओर लौटने के कालों के समान था, जो प्राचीन इस्राएल में उसके सेवकों की ओर से दिए गए ताड़ना के संदेशों के पश्चात् आते थे। इसमें वे विशेषताएँ विद्यमान थीं जो प्रत्येक युग में परमेश्वर के कार्य को चिह्नित करती हैं। इसमें उन्मत्त उल्लास बहुत कम था, वरन् हृदय की गहरी जाँच, पाप का अंगीकार, और संसार का परित्याग था। प्रभु से भेंट करने की तैयारी ही व्याकुल आत्माओं का बोझ थी। इसमें दृढ़ प्रार्थना और परमेश्वर के प्रति निष्कपटी समर्पण था।” *The Great Controversy*, 400, 401.

22 अक्टूबर, 1844 को द्वार का बंद होना शीघ्र आने वाली रविवार व्यवस्था का प्रतीक है, और 22 अक्टूबर के बंद द्वार से पहले जो मार्गचिह्न था, वह एक्सेटर का शिविर-सम्मेलन था। इसलिए एक्सेटर का शिविर-सम्मेलन मिलान की राजाज्ञा के साथ मेल खाता है। यह मसीह के विजयी प्रवेश के साथ भी मेल खाता है।

“मध्यरात्रि की पुकार तर्क-वितर्क के द्वारा उतनी अधिक नहीं फैली, यद्यपि पवित्रशास्त्र का प्रमाण स्पष्ट और निर्णायक था। उसके साथ एक प्रेरक सामर्थ्य थी, जो आत्मा को आंदोलित करती थी। वहाँ न कोई संदेह था, न कोई प्रश्न। मसीह के यरूशलेम में विजयोत्सवपूर्ण प्रवेश के अवसर पर, वे लोग जो पर्व मनाने के लिए देश के सब भागों से एकत्र हुए थे, जैतून पर्वत पर उमड़ पड़े; और जब वे उस भीड़ में सम्मिलित हुए जो यीशु के साथ-साथ चल रही थी, तब उन्होंने उस घड़ी की प्रेरणा को ग्रहण किया, और इस जयघोष को और भी प्रबल करने में सहायक हुए, ‘धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है!’ [Matthew 21:9.] इसी प्रकार अविश्वासी भी, जो एडवेंटवादी सभाओं में उमड़ आते थे—कुछ जिज्ञासा से, और कुछ केवल उपहास करने के लिए—उस सन्देश के साथ उपस्थित उस दृढ़विश्वास उत्पन्न करनेवाली सामर्थ्य को अनुभव करते थे, ‘देखो, दूल्हा आता है!’” *Spirit of Prophecy*, volume 4, 250.

मिलान का आदेश उस भविष्यसूचक घेराबन्दी को चिह्नित करता है, जिसका प्रतिरूप 587 ईसा-पूर्व में नबूकदनेस्सर और सन् 66 में सेस्तियुस द्वारा प्रस्तुत किया गया था। उन दोनों घेराबन्दियों ने क्रमशः 586 ईसा-पूर्व और 70 में यरूशलेम के विनाश का परिणाम उत्पन्न किया। सेस्तियुस की घेराबन्दी समाप्त हुई, और साढ़े तीन वर्ष बाद तीतुस के अधीन घेराबन्दी फिर से आरम्भ हुई; इस प्रकार एक ऐसी भविष्यसूचक अवधि प्रदान हुई, जो एक अल्फा रोमी शासक से आरम्भ होती है और एक ओमेगा शासक पर समाप्त होती है। वे साढ़े तीन वर्ष पोपतंत्र द्वारा यरूशलेम के

रौंदे जाने का प्रतिनिधित्व करते हैं, और उस शीघ्र आने वाले रविवार के कानून का भी, जब पोपतंत्र का घातक घाव चंगा हो जाएगा और वह फिर से साढ़े तीन प्रतीकात्मक वर्षों के लिए राज्य करेगी।

परन्तु जो आँगन मन्दिर के बाहर है, उसे छोड़ दे, और उसका नाप न ले; क्योंकि वह अन्यजातियों को दे दिया गया है; और वे पवित्र नगर को बयालीस महीनों तक पैरों तले रौंदेंगे। प्रकाशितवाक्य 11:2.

538 में, और फिर आने वाले रविवार-विधि के समय, यरूशलेम को रौंदे जाने की प्रक्रिया आरम्भ होती है। उन दोनों रविवार-विधियों का प्रतिनिधित्व वर्ष 321 द्वारा किया गया था, जब कॉन्स्टैन्टाइन महान ने पहली रविवार-विधि पारित की। 538 में, परमेश्वर की कलीसिया को साढ़े तीन वर्षों तक सताने (रौंदने) के लिए पोपसत्ता को सामर्थ्य दिया गया, जैसा कि सेस्टियस से टाइटस तक के इतिहास द्वारा निरूपित किया गया है। 538 में, पोपसत्ता ने ऑर्लियाँ की तृतीय परिषद में एक रविवार-विधि पारित की। शीघ्र आने वाली रविवार-विधि यह चिन्हित करती है कि कब पोपसत्ता को फिर से मन्दिर को रौंदने (सताने) का सामर्थ्य दिया जाता है।

313 उस प्रथम आदेश की पहचान करता है जिसने 321 में प्रथम रविवार कानून को जन्म दिया। फिर 330 में, साम्राज्य भविष्यवाणी के अनुसार पूर्व और पश्चिम में विभाजित हुआ, इस प्रकार “बयालीस” प्रतीकात्मक महीनों के पापीय उत्पीड़न की दूसरी अवधि के ओमेगा निष्कर्ष को चिह्नित करते हुए—एक ऐसी उत्पीड़न और रौंदे जाने की अवधि जो संयुक्त राज्य अमेरिका में अल्फा रविवार कानून से आरम्भ हुई।

और तीसरे स्वर्गदूत ने उनके पीछे-पीछे आते हुए ऊँचे शब्द से कहा, यदि कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की उपासना करे, और उसकी छाप अपने माथे पर या अपने हाथ पर ग्रहण करे, तो वह भी परमेश्वर के क्रोध की दाखमधु पिएगा, जो उसके रोष के कटोरे में बिना मिलावट उंडेली गई है; और वह पवित्र स्वर्गदूतों के साम्हने और मेम्ने के साम्हने आग और गन्धक से पीड़ित किया जाएगा। और उनकी पीड़ा का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा; और जो उस पशु और उसकी मूर्ति की उपासना करते हैं, और जो कोई उसके नाम की छाप ग्रहण करता है, उन्हें न दिन को चैन है, न रात को। यहाँ पवित्र लोगों का धैर्य है; यहाँ वे हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु के विश्वास को मानते हैं। प्रकाशितवाक्य 14:9-12.

मैदान

‘मिलान’ का लैटिन अर्थ है—मैदान के मध्य। पूर्व और पश्चिम के बीच, सन् 313 में पश्चिम के कॉन्स्टैन्टाइन ने पूर्व के लिसिनियस के साथ एक गठबंधन की खोज की। यह आदेश पूर्व और पश्चिम को एक साथ लाने के प्रयास का प्रतिनिधित्व करता था, और इस आदेश की पुष्टि एक संधि-विवाह के द्वारा हुई, जब कॉन्स्टैन्टाइन की सौतेली बहन कॉन्स्टैन्टिया का विवाह लिसिनियस से हुआ। तौभी, जैसे दानिय्येल अध्याय 11 में उत्तर के सेल्यूसिडों और दक्षिण के टॉलेमी के बीच पहला संधि-विवाह हुआ था, वैसे ही यह विवाह भी असफल होने के लिए नियत था, क्योंकि वह पुरानी कहावत पूरी हुई जो कहती है, ‘पूर्व पूर्व है, और पश्चिम पश्चिम है, और ये दोनों कभी नहीं मिलेंगे।’

वर्ष ‘330’ सीधे दानिय्येल ग्यारह के पद चौबीस, सत्ताईस और उनतीस में प्रस्तुत किया गया है। यह 313 से 330 तक के सत्रह वर्षों को दानिय्येल ग्यारह की भविष्यवाणी-रेखा में ले आता है, और भविष्यवाणी की अनिवार्यता के अनुसार यह 313 में पूर्व और पश्चिम के उस संधि-विवाह को उसी अध्याय में वर्णित प्रथम संधि-विवाह के समानांतर के रूप में चिन्हित करता है।

“दानिय्येल के ग्यारहवें अध्याय की भविष्यवाणी लगभग अपनी पूर्ण सिद्धि तक पहुँच चुकी है। इस भविष्यवाणी की पूर्ति में जो इतिहास घटित हो चुका है, उसका बहुत-सा भाग पुनः दोहराया जाएगा।” Manuscript Releases, संख्या 13, 394.

एंटिओकस II थियोस, जिसने 261-246 ईसा-पूर्व तक राज्य किया, ने अपनी पहली पत्नी लाओडीके I को त्यागकर मिस्र के टॉलेमी II फिलाडेल्फस की पुत्री बेरेनीके से विवाह किया। यह विवाह 252 ईसा-पूर्व में द्वितीय सीरियाई युद्ध

को समाप्त करने वाली शांति-व्यवस्था का एक भाग था। इसके पश्चात जब 324 में कॉन्स्टैन्टाइन ने लाइसिनियस को पराजित किया, तब वह विवाह-सम्बन्ध भी समाप्त हो गया, जैसे एंटीओकस और बेरेनीके का विवाह भी समाप्त हुआ था, जब 246 ईसा-पूर्व में पहली पत्नी लाओडीके ने एंटीओकस को विष देकर मार डाला। वह विवाह, जिसने द्वितीय सीरियाई युद्ध के अंत को चिह्नित किया था, और एंटीओकस की हत्या, तथा उसके बाद बेरेनीके, उसके बच्चे और उसके मिस्री अनुचर-मंडल की हत्या ने तृतीय सीरियाई युद्ध के आरम्भ को चिह्नित किया। 313 की संधि-विवाह ने सताव के उस काल का अंत किया, जिसका प्रतिनिधित्व स्मूर्ना की कलीसिया करती है, और समझौते के उस काल का आरम्भ किया, जिसका प्रतिनिधित्व पर्गमुस की कलीसिया करती है।

सेल्यूकिक इतिहास के आरम्भ में हुआ विवाह, सेल्यूकिक साम्राज्य के अंत में हुए उस संधि-विवाह का प्रतिरूप था, जब Antiochus the Great ने अपनी पुत्री Cleopatra I को Ptolemy V Epiphanes को दिया। यह विवाह 193 BC में Raphia में हुआ, परन्तु यह गठबन्धन शीघ्र ही समाप्त हो गया, जैसा कि उत्तर के राजा और दक्षिण के राजा के बीच हुआ पहला संधि-विवाह भी समाप्त हो गया था। सेल्यूकिक साम्राज्य के अल्फा और ओमेगा संधि-विवाह, दानियेल ग्यारह के भविष्यद्वाणी-सम्बन्धी इतिहास में बाद में उल्लिखित उस संधि-विवाह का प्रतिरूप हैं, जब 40 BC में Octavian ने अपनी बहन Octavia Minor को Mark Antony को दिया। Mark Antony और Octavian, रोम के पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों पर आधिपत्य के संघर्ष में थे, जो 44 BC में Julius Caesar की हत्या के साथ आरम्भ हो गया था। 40 BC में उस विवाह के समय Brundisium की सन्धि स्थापित की गई, और आठ वर्ष बाद 32 BC में Mark Antony ने औपचारिक रूप से Octavia को तलाक दे दिया और 31 BC में Actium के युद्ध को उत्पन्न कर दिया, जहाँ Mark Antony और Cleopatra, (अन्तिम Cleopatra), दोनों का अन्त हो गया।

सेल्यूसिक साम्राज्य की ओमेगा वैवाहिक संधि ने पहली क्लियोपेट्रा को प्रस्तुत किया, जो अंतिम क्लियोपेट्रा का प्रतिरूप थी; जिसकी वंश-परंपरा ने 40 ईसा पूर्व में रोमी साम्राज्य की भविष्यसूचक अल्फा वैवाहिक संधि तक पहुँचने वाली कड़ी का निर्माण किया। वे तीनों संधि-विवाह मिलान के फ़रमान की संधि-विवाह का प्रतिरूप हैं। मिलान का फ़रमान एक भविष्यसूचक घरेबंदी के आरम्भ को चिह्नित करता है; यह एक भविष्यसूचक चिन्ह का प्रतिनिधित्व करता है; यह एक धर्मी कलीसिया से अधर्मी कलीसिया की ओर संक्रमण को चिह्नित करता है, और इस प्रकार सात में से आठवें अस्तित्व की पहली के साथ सामंजस्य रखता है। यह ऐसी संधि-विवाह को चिह्नित करता है जो एक युद्ध को समाप्त करती है, जब तक कि उस संधि-विवाह का तलाक न हो जाए, और इस प्रकार एक युद्ध के आरम्भ को चिह्नित करती है। दो रोमी विवाहों में, तलाक साम्राज्य के एकीकरण को उत्प्रेरित करता है। 313 एक्सेटर शिविर-सभा को भी चिह्नित करता है, जहाँ आधी रात की पुकार के संदेश की उद्घोषणा आरम्भ होती है और 22 अक्टूबर के बन्द द्वार तक ले जाती है।

हम अगले लेख में इन सत्यों पर आगे विचार करेंगे।